International Journal of Business Economics and Management Research
Vol. 13, Issue 12, Dec 2022 Impact Factor: 6.857 ISSN: (2229-4848)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

''बालक एवं बालिकाएं की शैक्षिक आकांक्षा का विद्यालय समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन''

डॉ0 गीता, शोधकर्ती (शिक्षाशास्त्र)
स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ।

सारांश–

बालक एवं बालिकाएं का विद्यालय समायोजन उनकी शैक्षिक आकांक्षा का आधार है विद्यार्थी का विद्यालय समायोजन उसकी शैक्षिक आकांक्षा के कारण प्रभावित होता है जब विद्यार्थी उचित समायोजन नहीं कर पाता। उस समय कुण्ठा, तनाव, दुश्चिन्ता का क्रम शुरू हो जाता है लेकिन विद्यार्थी की शैक्षिक आकाँक्षा लक्ष्योंन्मुखी होती है। शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत शोध–पत्र में बालक एवं बालिकाएं की शैक्षिक आकाँक्षा का विद्यालय समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है।

प्रमुख शब्द– शैक्षिक आकांक्षा, विद्यालय समायोजन

प्रस्तावना–

जिस प्रकार नवजात शिशु असहाय तथा अबोध हेाता है वह न बोलना जानता है, न चलना–फिरना, न ही कोई मित्र होता है, न ही कोई शत्रु, यहीं नहीं उसे समाज की रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं का भी कोई ज्ञान नहीं होता और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्यों को प्राप्त करने की जिज्ञासा या उत्सुकता पायी जाती है, परन्तु जैसे–जैसे उसका विकास होता है। बालक अपने वातावरण के अनुकूल अपने को समायोजन करने का प्रयास करने लगता है। इस प्रकार बालक अपने निरन्तर प्रयास तथा अनुभवों से समाज में कुछ न कुछ सीखता है और अपने लक्ष्य और आकांक्षाओं की ओर अग्रसित होता है। इस प्रकार बालक अपने विकास के लिये जन्मजात शक्तियों के द्वारा सामांजस्य स्थापित करने के लिये निरन्तर क्रियाशील रहता है, जिस प्रकार पौधा अपने आप विकसित होता है। उसी प्रकार बालक का विकास भी आत्म–क्रिया के द्वारा होता है।

लेकिन शिक्षा जीवन का वह प्रकाश है जो बालक एवं बालिकाएं के जीवन को सुव्यवस्थित बनाती है जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है और सूर्य के अस्त होने पर कुम्हला जाता है उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर बालक एवं बालिकाएं कमल के फूल की भांति

खिल उठता है तथा अशिक्षित होने पर अन्धकार में डूब जाता है। इस प्रकार बालक के विकास व समायोजन शिक्षा वांछनीय परिवर्तन करती है, इस सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अन्य प्राणियों की भांति बालक की कुछ अन्य आवश्ययकतायें होती है। यहीं आवश्यकतायें बालक एवं बालिकाएं को अपनी आकांक्षा प्राप्ति की ओर संकेत करती है, जो वह स्वयं निर्धारित करता है क्योंकि आकांक्षा स्तर बालक अपने पूर्व शैक्षिक उपलब्धियों के निष्पादन के आधार पर निश्चित होती है। आकांक्षा स्तर से तात्पर्य एक ऐसे निष्पादन स्तर से होता है, जिसकी उम्मींद बालक एवं बालिकाएं करता है जिसे विद्यार्थी अपनी गत या पिछली उपलब्धि स्तर के आधार पर तय करता है शायद ही ऐसा कोई विद्यार्थी होगा जिसके मन में आकांक्षाये न उत्पन्न होती हो, ये इच्छायें, जिज्ञासा और आकांक्षायें ही बालक एवं बालिकाएं के अन्दर गुणवत्ता प्रदान करती है किसी भी विद्यार्थी की कार्य करने की क्षमता व उसे पाने की इच्छा उसमें आकांक्षा स्तर से निर्धारित होती है। इस इच्छाओं की आन्तरिक संरचना को ही आकांक्षा स्तर कहते है तथा जब यह शिक्षा के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है तो इसे शैक्षिक आकांक्षा स्तर कहा जाता है जिसके लिये बालक एवं बालिकाएं को अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करना होता है अर्थात समायोजन परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थतियों में सन्तुलन रखता है यदि बालक के विकास की स्थिति में उचित अनुकूलन नहीं होगा तो समायोजन की समस्या को विकसित करता है, जिसके कारण विद्यार्थी में अवसाद और असमान्य व्यवहार विकसित होता है। अतः वर्तमान में विद्यालयों की यह जिम्मेदारी है, के वह बालक एवं बालिकाएं के भावी जीवन को उज्जवल बनाने के लिये उनके विद्यालय समायोजन पर ध्यान दे विद्यार्थी विद्यालय समायोजन से प्रभावित होकर अपनी आकांक्षा को निर्मित करता है और आकांक्षा ही विद्यार्थी के जीवन को ऊँचा उठाने तथा गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अध्ययन की आवश्यकता–

वर्तमान के इस विलक्षित समाज में बालक एवं बालिकाएं की समस्यायें बढ़ती जा रही है, क्योंकि आज का युग नवीन तकनीकी का युग है और समाज में हो रहे नवीन अविष्कारों और परिवर्तन के कारण बालक एवं बालिकाएं की आकांक्षा का स्तर ऊँचा होता जा रहा है, जिसके कारण उनकी आवश्यकतायें भी बढ़ती जा रही है लेकिन उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर वह कुंठित होता जा रहा है, जिसके कारण बदलते हुये समाज ने बालक के सामने समायोजन क्षमता के अभाव में अनेक

समस्यायें उत्पन्न हो रही है जिसके कारण बालक के वास्तविक व्यवहार के स्थान पर बनावटी व्यवहार दृष्टिगोचर होने लगता है, जो बालक को मानसिक एवं शारीरिक रूप से परेशान करता है, क्योंकि यदि बालक द्वारा निर्धारित किये गये आकांक्षा स्तर के अनुरूप विद्यालय समायोजन विद्यार्थी द्वारा नहीं हो पाता जिसका प्रभाव विद्यार्थी की क्रियाशीलता पर पड़ रहा है।

अध्ययन की समस्या–

''बालक एवं बालिकाएं की शैक्षिक आकांक्षा का विद्यालय समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन''

अध्ययन की उद्देश्य–

1. उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालक के विद्यालय समायोजन पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
2. उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालिकाएं के विद्यालय समायोजन पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना–

1. उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालक के विद्यालय समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालिकाएं के विद्यालय समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन को पूर्ण करने के लिये सर्वेक्षण की विश्लेषणात्मक विधि का अनुसरण किया गया है।

शोध परिसीमाएं–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन मेरठ मण्डल तक ही समिति है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यालय के बालक एवं बालिकाएं को शामिल किया गया है।

शोध अभिकल्प–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकल समूह अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ मण्डल के संचालित विद्यालय एवं उन विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाएं को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध न्यादर्श के रूप में मेरठ मण्डल के चार जिलों में से दो जिलों को यादृच्छिक विधि के माध्यम से चयनित किया गया है एवं प्रत्येक जिले से 5 सरकारी विद्यालय एवं 5 स्ववित्त पोषित विद्यालयों को चयनित किया गया है एवं प्रत्येक विद्यालय से 10 उच्च शैक्षिक आकांक्षा वाले बालक एवं बालिकाएं एवं 10 निम्न आकांक्षा वाले बालक एवं बालिकाएं को चयनित किया गया है, इस प्रकार यह अध्ययन विद्यालयों के कुल 400 बालक एवं बालिकाएं से पूर्ण किया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आँकड़ों के संग्रह के लिये वी0पी0 शर्मा एवं ए0 गुप्ता द्वारा निर्मित, मानकीकृत 'शैक्षिक आकांक्षा पैमाना'' का प्रयोग किया गया है व समायोजन से सम्बन्धित S.M. Mohsin, Shamshad Hussain and Khursheed Jehan, Mohsin Shamshad " Adjustment Inventory" का प्रयोग किया गया।

International Journal of Business Economics and Management Research
Vol. 13, Issue 12, Dec 2022 Impact Factor: 6.857 ISSN: (2229-4848)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

आंकड़ों का विश्लेषण–

परिकल्पना–1

उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक के विद्यालय समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

समायोजन के आयाम	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के विद्यार्थी	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं की संख्या	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं का मध्यमान (Mean)	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं का प्रमाणिक विचलन (S.D.)	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं की प्रमाणिक त्रुटि ($S.E_D.$)	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं का टी–परीक्षण	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं का सार्थकता स्तर
घर	बालक	177	6.62	1.81	0.09	10.94	सार्थक अन्तर है।
	बालक	23	10.34	2.53	0.37		
स्वास्थ्य	बालक	142	5.40	1.89	0.11	27.55	सार्थक अन्तर है।
	बालक	58	10.91	1.81	0.16		
समाज	बालक	116	10.27	2.24	0.14	36.52	सार्थक अन्तर है।
	बालक	84	16.48	2.07	0.16		
सवेंगात्क	बालक	121	5.64	4.22	0.27	44.72	सार्थक अन्तर है।
	बालक	79	15.48	2.15	0.17		

स्वतन्त्रता अंश–198, सार्थक का स्तर–0.05 एवं 0.01,सारणीमान–197 एवं 2.60

निष्कर्ष–

उपरोक्त सारिणी में उद्देश्य एवं परिकल्पना नं01 उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालकके विद्यालय समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करते हुए अन्तर की सार्थकता स्थिति को दर्शाया गया है जिससे स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालक के विद्यालय समायोजन के विभिन्न आयामों–घर, स्वास्थ्य, समाज,

संवेगात्मक पर प्राप्तांकों का विश्लेषण करके मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया है तथा प्राप्त मध्यमान व प्रमाणिक विचलन के आधार पर प्रमाणिक विचलन त्रुटि ज्ञात करते हुए टी–परीक्षण की गणना की गयी, जो समायोजन के प्रथम आयाम 'घर' के लिए उच्च एवं निमन शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालकका मध्यमान क्रमशः 6.62, 10.34 तथा प्रमाणिक विचलन 1.81, 2.53 व प्रमाणिक त्रुटिमान 0.09, 0.37 प्राप्त हुआ जिसके आधार पर 't' मान की गणना की गयी जो कि 10.94 प्राप्त हुई। सारणीमान में 198 स्वतन्त्रता अंश पर 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 व 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.60 के मान से अधिक पाया गया तथा द्वितीय आयाम– 'स्वास्थ्य' के लिए उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालकका मध्यमान क्रमशः 5.40, 10.91 तथा प्रमाणिक विचलन 1.89, 1.81 व प्रमाणिक त्रुटि 0.11, 0.16 प्राप्त हुआ, जिसके आधार पर 't' परीक्षण प्राप्त किया गया जो कि 27.55 प्राप्त हुआ जो सारणी के 198 स्वतन्त्रता अंश 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 व 0.01 के सार्थकता स्तर के 2.60 के मान से अधिक है। तृतीय आयाम–'समाज' के लिये उच्च एंव निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालक का मध्यमान क्रमशः 10.27, 16.48 तथा प्रमाणिक विचलन 2.24, 2.07 व प्रमाणिक त्रुटिमान 0.14, 0.16 प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर 't' परीक्षण प्राप्त किया गया जो कि 36.52 प्राप्त हुआ जो सारणीमान के 198 स्वतन्त्रता अंश पर 0'05 के सार्थकता स्तर पर 1. 97 व 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.60 के मन से अधिक है तथा चतुर्थ आयाम 'संवेगात्मक' के लिये निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालकका मध्यमान क्रमशः 5.64, 15.48 तथा प्रमाणित विचलन 4.22, 2.15 व प्रमाणिक त्रुटिमान 0.27, 0.17 प्राप्त हुआ जिसके आधार पर 't' परीक्षण ज्ञात किया गया जोकि 44.72 प्राप्त हुआ जो सारणी के 198 स्वतन्त्रता अंश 0.05 के सार्थकता स्तर के 1.98 व 0.01 के सार्थकता स्तर मान 2.60 के मान से अधिक है।

अतः शोधकर्ती विद्यालय समायोजन के विभिन्न आयामों, घर तथा समाज के अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर परिकल्पना नं0 01 को निरस्त करते हुए कह सकते

है कि विद्यालय समायोजन के उपर्युक्त आयामों का उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालक में सार्थक अन्तर होता है।

परिकल्पना–2

उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर की बालिकाएं के विद्यालय समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

समायोजन के आयाम	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के विद्यार्थी	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं की संख्या	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं का मध्यमान (Mean)	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं का प्रमाणिक विचलन (S.D.)	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं की प्रमाणिक त्रुटि ($S.E_D.$)	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं का टी–परीक्षण	उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के बालक एवं बालिकाएं का सार्थकता स्तर
घर	बालिकाएं	181	6.39	1.84	0.09	22.97	सार्थक अन्तर है।
	बालिकाएं	19	12.26	1.31	0.21		
स्वास्थ्य	बालिकाएं	159	5.31	1.77	0.09	23.36	सार्थक अन्तर है।
	बालिकाएं	41	10.43	1.65	0.18		
समाज	बालिकाएं	116	10.59	2.09	0.16	35.71	सार्थक अन्तर है।
	बालिकाएं	84	15.59	1.82	0.13		
सवेंगात्क	बालिकाएं	141	7.16	1.26	0.07	44.81	सार्थक अन्तर है।
	बालिकाएं	59	15.50	3.37	0.31		

स्वतन्त्रता अंश–198, सार्थक का स्तर–0.05 एवं 0.01,सारणीमान–197 एवं 2.60

निष्कर्ष–

उपरोक्त सारिणी में उद्देश्य एवं परिकल्पना नं02 उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालिकाएं के विद्यालय समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करते हुए अन्तर की सार्थकता स्थिति को दर्शाया गया है जिससे स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालिकाएं के विद्यालय समायोजन के विभिन्न आयामों–घर, स्वास्थ्य, समाज, संवेगात्मक पर प्राप्तांकों का विश्लेषण करके मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया है तथा प्राप्त मध्यमान व प्रमाणिक विचलन के आधार पर प्रमाणिक विचलन त्रुटि ज्ञात करते हुए टी–परीक्षण की गणना की गयी, जो समायोजन के प्रथम आयाम 'घर' के लिए उच्च एवं निमन शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाएं का मध्यमान क्रमशः 6.39, 12.26 तथा प्रमाणिक विचलन 1.84, 1.31 व प्रमाणिक त्रुटिमान 0.09, 0.21 प्राप्त हुआ जिसके आधार पर 't' मान की गणना की गयी जो कि 22.57 प्राप्त हुई। सारणीमान में 198 स्वतन्त्रता अंश पर 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 व 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.60 के मान से अधिक पाया गया तथा द्वितीय आयाम– 'स्वास्थ्य' के लिए उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाएं का मध्यमान क्रमशः 5.31, 10.43 तथा प्रमाणिक विचलन 1.77, 1.65 व प्रमाणिक त्रुटि 0.09, 0.18 प्राप्त हुआ, जिसके आधार पर 't' परीक्षण प्राप्त किया गया जो कि 23.36 प्राप्त हुआ जो सारणी के 198 स्वतन्त्रता अंश, 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 व 0.01 के सार्थकता स्तर के 2.60 के मान से अधिक है। तृतीय आयाम–'समाज' के लिये उच्च एंव निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाएं का मध्यमान क्रमशः 10.59, 15.59 तथा प्रमाणिक विचलन 2.09, 1.80 व प्रमाणिक त्रुटिमान 0.16, 0.13 प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर 't' परीक्षण प्राप्त किया गया जो कि 35.71 प्राप्त हुआ जो सारणीमान के 198 स्वतन्त्रता अंश पर 0'05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 व 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.60 के मन से अधिक है तथा चतुर्थ आयाम 'संवेगात्मक' के लिये निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाएं का मध्यमान क्रमशः 7.61, 15.50 तथा प्रमाणित विचलन 1.26, 3.37 व प्रमाणिक त्रुटिमान 0.07, 0.31 प्राप्त हुआ जिसके आधार पर 't' परीक्षण ज्ञात

किया गया जोकि 44.81 प्राप्त हुआ जो सारणी के 198 स्वतन्त्रता अंश 0.05 के सार्थकता स्तर के 1.98 व 0.01 के सार्थकता स्तर मान 2.60 के मान से अधिक है।

अतः शोधकर्ती विद्यालय समायोजन के विभिनन आयामों, घर तथा समाज के अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर परिकल्पना नं0 02 को निरस्त करते हुए कह सकते है कि विद्यालय समायोजन के उपर्युक्त आयामों का उच्च एवं निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का बालिकाएं में सार्थक अन्तर होता है।

संदर्भ सूचीः–

1. आस्थाना, डॉ0 विपिन और आस्थाना, श्वेता, (2008), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
2. अग्निहोत्री, रविन्द्र (2008), आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्यायें और समाधान, जयपुर, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. अग्रवाल जे0सी0 (2015), उदीयमान भारतीय समाज में अध्यापक, आगरा–2, अग्रवाल पब्लिकेशन।
4. भार्गव महेश (1995), आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन, आगरा, पेज 540
5. गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 गुप्ता, प्रो0 अल्का (2018), उच्च्तर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धान्त एवं व्यवहार, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
6. गुप्ता एस0पी0 एवं अल्का (2013) सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
7. कपिल, एच0के0 (1998) अनुसंधान विधियाँ, आगरा, भार्गव बुक हाउस।
8. कौल, एल0 (2003), शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाऊस।